हैं। अतः इस प्राकृत देह को त्यागने से पूर्व ही इन विकारों को जीतने के लिए यथाशक्ति प्रयास करे। जो ऐसा कर सकता है, उसे आत्मज्ञानी समझा जाता है। वह स्वरूप-साक्षात्कार में सुखास्वादन करता है। काम-क्रोध को वश में करने के लिए प्राणपण से सतत प्रयत्न करना योगी का परम कर्तव्य है।

23/4

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति।।२४।।

यः =जो; **अन्तःसुखः** =अन्तर में सुखी; **अन्तः आरामः** =अन्तर में क्रियाशील; **तथा** =तथा; **अन्तः ज्योतिः** =आत्म-प्रदीप है; **एव** =निःसन्देह; **यः** =जो; **सः** =वह; **योगी** =योगी; **ब्रह्मनिर्वाणम्** =परतत्त्व में मुक्ति; **ब्रह्मभूतः** =स्वरूपज्ञानी; **अधिगच्छति** =प्राप्त करता है।

अनुवाद

जो आत्मा में सुख का अनुभव करता है, आत्मा में क्रियाशील है और आत्मा में ही दृष्टि वाला है, वही यथार्थ में संसिद्ध योगी है और अन्त में परब्रह्म को प्राप्त हो जाता है।।२४।।

तात्पर्य

जिसने आत्मसुख का आस्वादन न किया हो, वह मिथ्या सुख के लिए की जाने वाली बाह्य क्रियाओं से विरत कैसे होगा? जीवन्मुक्त पुरुष यथार्थ अनूभूति में सुखास्वादन करता है। अतः एक स्थान पर शान्तिपूर्वक स्थित रहकर वह आन्तरिक जीवन की क्रीड़ा का आनन्द ले सकता है। ऐसे जीवन मुक्त में बाह्य प्राकृत-सुख की कामना शेष नहीं रहती। इस 'ब्रह्मभूत' नामक स्थिति को प्राप्त पुरुष के लिए अपने घर—भगवद्धाम की फिर प्राप्ति निश्चित हो जाती है।

23/4

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।२५।।

लभन्ते =प्राप्त होते हैं; **ब्रह्मनिर्वाणम्** =मुक्ति को; **ऋषयः** =ऋषिगण; **क्षीण-कल्मषाः** =सम्पूर्ण पापों से मुक्त हैं; **छिन्न** =निवृत्त हुआ; **द्वैधाः** =द्वैत; **यतात्मानः** = स्वरूप-साक्षात्कार के साधन में तत्पर; **सर्वभूत** =जीवों के; **हिते** =कल्याण में; **रताः** = संलग्न।

अनुवाद

जो द्वैत तथा संशय से मुक्त हो चुके हैं, जिनका चित्त आत्मपरायण है, जो सम्पूर्ण पापों से रहित हैं और सम्पूर्ण प्राणियों के कल्याण में संलग्न हैं, वे मुक्ति को प्राप्त होते हैं।।२५।।

तात्पर्य

एकमात्र पूर्णतया कृष्णभावनाभावित पुरुष को ही जीवमात्र के कल्याणकार्य में संलग्न कहा जा सकता है। जो मनुष्य तत्त्व से जानता है कि श्रीकृष्ण सबके